



1002



1006



1005



1004



1003



1002



1001

Saraj



1002

1001

जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है,
न शोक करता है, न कामना करता है
तथा जो शुभ और अशुभ सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है-
वह भक्तियुक्त पुरुष मुझको प्रिय है ।



1003



1004

1005

1006



Saroj



Samyukta
Vol-02